डॉ. सतीश यादव

बर 1973। एम.ए. हिंदी पीएच.डी., 1995 से शिवाजी महाविद्यालय, रेनापुर जि. लातूर
हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत। सन् 2022 तक 18 पुस्तकें प्रकाशित। आलोचना
लेखन का प्रमुख कार्यक्षेत्र। हिंदी और मराठी की पत्र-पत्रिकाओं में लेखन।

) : हिंदी के कालजयी उपन्यास, आधुनिक विमर्श: विविध आयाम, आलोचना का स्वराज,
डेकर का रचना कर्म तथा आलोचना का आलोक।

संपादन) : 'पथिक' कविवर हरिवंशराय बच्चन, निबंध सौरभ, साहित्य भारती, अर्वाचीन
गद्यकार अज्ञेय तथा उनकी रचना धर्मिता (खंड 2), कवियों के कवि अज्ञेय (खंड 1),
व मुक्तिबोध: सृजन और संदर्भ, हाशिए का समाज और हिंदी-मराठी साहित्य, लोकधर्मी
: डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, फणीश्वरनाथ रेणु : संदर्भ और प्रकृति, गीत गाएँ विज्ञान के,
नों की (अनुवाद संपादन)।

ाठी) : समीक्षेचा अनुबंध

: 'अंतरीचा डोह' (मराठी वैचारिक लेख संग्रह)

'गुरु गौरव पुरस्कार', 'राष्ट्रभक्त स्वामी विवेकानंद पुरस्कार', स्वामी रामानंद तीर्थ
विश्वविद्यालय, नांदेड का 'उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार', महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य
ुंबई का 'आलोचना का स्वराज' ग्रंथ हेतु 'आचार्य नंददुलारे वाजपेयी समीक्षा पुरस्कार',
ड. देविदासराव जमदाडे प्रबोधन विचारमंच, लातूर का राज्य-स्तरीय 'कार्यनिष्ठ शिक्षक
ं. देवीसिंह चौहान साहित्यिक पुरस्कार (जि.प., लातूर)।

मुक्तिपर्व, शारदा नगर, अंबाजोगाई रोड, लातूर (महाराष्ट्र) 413 531,
804

यश
यश पब्लिकेशंन्स, दिल्ली
10753, गली नं. 3, सुभाष पार्क,
नवीन शाहदरा दिल्ली-32

ISBN 978-93-85647-03-1
9 789385 647031
www.yashpublications.co.in

फणीश्वरनाथ रेणु
का साहित्य
संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल
डॉ. सतीश यादव, डॉ. संतोष कुलकर्णी
डॉ. रणजीत जाधव, डॉ. हणमंत पवार

यश

फणीश्वरनाथ रेणु
का साहित्य
संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल
डॉ. सतीश यादव
डॉ. संतोष कुलकर्णी
डॉ. रणजीत जाधव
डॉ. हणमंत पवार

Scanned with ACE Scanner

(क) कहानीकार फणीश्वरनाथ रेणु

36. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी और रेणु — 204
डॉ. बबन रंभाजीराव बोडके

37. फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियों में आँचलिकता — 209
डॉ. सौ. अरुणा राजेंद्र शुक्ल

38. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में लोकजीवन — 218
डॉ. केशव क्षिरसागर

39. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में व्यक्त ग्रामीण जीवन परिवेश — 224
डॉ. राजकुमार पंडितराव जाधव

40. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में ग्रामीण संवेदना — 229
डॉ. गोकुल महादेव भगत

41. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में व्यक्त समाज जीवन की प्रासंगिकता — 234
डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ

42. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में ग्राम यथार्थ — 242
डॉ. ज्ञानेश्वर अंकुशराव देशमुख

43. ग्रामीणांचल के परिप्रेक्ष्य में रेणु की कहानियाँ — 247
डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे

44. 'तीसरी कसम' कहानी के हिरामन और हीराबाई : चरित्र स्त्रोत — 252
डॉ. गोरख थोरात

45. प्रेम की गहरी पीड़ा की अभिव्यक्ति- 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम' — 259
प्रो. डॉ रणजीत जाधव

46. एक शर्मीले गाड़ीवान की 'तीसरी कसम' — 264
डॉ. प्रियदर्शिनी

47. आँचलिक परिवेश की सौंधी महक : तीसरी कसम — 273
प्रा. डी आर भुरे

48. 'तीसरी' कसम कहानी का हिरामन और हीराबाई — 280
डॉ. अर्जुन कसबे

49. 'पंचलाइट' कहानी में स्वाधीन भारत के ग्रामांचल का चित्रण — 2
डॉ. संजय नाईनवाड

50. ग्रामीण श्रमिक कलाकार की संवेदनशील अभिव्यक्ति— 'ठेस' — 292
डॉ. धीरज जनार्धन व्हत्ते

51. तीसरी कसम का हिरामन — 300
डॉ. कुमार बनसोडे

52. रेणु की कहानी 'तीसरी कसम' का फिल्मांकन : भोले-भाले हिरामन के अस्फूट प्रेम की कालजयी गाथा — 304
डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

53. 'रसप्रिया' और 'ठेस' कहानी में व्यक्त कलाकार का संघर्ष — 310
डॉ. मुकुंद कवडे

54. फणीश्वरनाथ रेणु की श्रेष्ठ आँचलिक कहानी रसप्रिया — 316
डॉ. पजई एस. आर.

55. फणीरवरनाथ रेणु की कहानियों में व्यक्त ग्रामीण कलाकार (विशेष संदर्भ : रसप्रिया और ठेस कहानी) — 320
डॉ. सविता चोखोबा किर्ते

56. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'रसप्रिया' में संवाद तथा लोक संगीत — 325
प्रा. डॉ. महावीर उदगीरकर

57. तीसरी कसम का हिरामन — 331
डॉ. रंजना पाटिल

58. 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम' का निश्छल प्रेमी गाड़ीवान हिरामन — 335
प्रो. डॉ. संजीवकुमार नरवाडे

59. फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में आँचलिकता — 341
डॉ. लावणे विजय भास्कर

60. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में चित्रित आंचलिक जीवन ('पंचलाइट' कहानी के विशेष संदर्भ में) — 345
डॉ. नवनाथ गाड़ेकर

Scanned with ACE Scanner

'ग्रामीणांचल के परिप्रेक्ष्य में रेणु की कहानियां'

डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे

हिंदी कथाकारों में फणीश्वर नाथ रेणु जी का नाम प्रेमचंद के बाद आदर से लिया जाता है। उन्होंने अपने कथाओं में ग्रामीण जीवन को यथार्थ रूप में चित्रित करते हुए अपने ग्राम्यांचल को प्रस्तुत किया है। रेणु की रचनाओं के प्राण तत्व गाँव और उसके निवासी है। क्योंकि उनकी मुख्य मान्यता थी कि, भविष्य में भारत की बौद्धिक चेतना के विकास की संभावना इन्हीं गाँवों पे छुपी हुई है। साहित्य में कल्पना को बढ़से रोकना है। इस बात की उन्हें चिंता थी। गाँव के जीवन की सच्चाई को उन्होंने अपने कथात्मक शैली में विकसित किया। रेनू जी की निगाहें भारत के गाँव पर थी। यथार्थ के नाम पर किसी आदर्श को सम्मानित करने का लोभ उन्हें कभी भी नहीं जड़ सका। दर्पण में चेहरे की तरह उनके भावना के प्रतिछबी प्रस्तापिथ हुई है। समीक्षकों ने आंचलिक शैली के नाम से परिचित कराया। लेकिन वास्तवतः वे इसी शैली से प्रतिबद्ध नहीं हो सके। रेनू जी की चाहे कहानियां हो उपन्यास हो सभी में ग्रामीण दृष्टि की सूक्ष्म निरीक्षण शैली प्रतिबिंबित होती है। आज के आलोचक जबरन उसकी शैली ली को परंपरा के सूत्र में प्रेमचंद में तलाशने की हिमाकत करते हैं। यह संभावित नहीं है। वस्तुः रेणु की परंपरा रेणु से ही आरंभ होती है और रेणु से ही समाप्त होती है। उनकी शैली का प्रॉपर संबंध किसी में ढूंढना उनके साथ बेमानी होगी। रेणु की रचनाओं में ग्राम बोध का विशिष्ट मूल्य प्रविष्ट होता है। वह किसी पुर्ववर्ती या परवृर्ती रचनाकारों में नहीं मिलता है। इंद्र प्रसाद पांडे जैसे प्रगतिशील आलोचक उपन्यास मैला आँचल में आंचलिक तत्व मिलते हैं। इस तरह की समीक्षा के जन्मदाता के योगदान को प्रदान करने की पहल का एक अंग होती है। सवाल यह नहीं है कि छायावाद, प्रगतिवाद या आंचलिक जैसे विशेषण के रूपों के साथ कब और क्यों

Scanned with ACE Scanner

जुड़ जाते हैं। या कब और किन रचना रुपों को देखकर किसी रचना शैली को प्रदान कर दिया जाता है। सवाल है कि, इस तरह के विशेषण किसी खास समय पर ही क्यों जोड़ दिए जाते हैं। इससे पहले या बाद में नहीं। जाहिर है किसी मौलिक चिंतन के धनी रचनाकार के साहित्य में ही खूबी है, जिनके कारण वह किसी विशेषण का हकदार होता है। और रचना की पहचान रेखांकित करने में सक्षम दिखाई देती है। तभी कोई विशेषण संपूर्ण विधा या चेतना का परिचय हो पाता है। अन्य तत्वों को ढूंढ ढूंढ कर अपनी रचना में समाविष्ट करके चलता है। उनके आधार पर ही उसकी रचना की जाती है, जो निश्चित ही किसी दूसरे में नहीं मिलती है। रेणु के साहित्यिक तत्व की कसौटी पर यशपाल या प्रेमचंद खरे नहीं उतरते हैं, नागार्जुन या भैरव प्रसाद गुप्त भी खरे नहीं उतरते, सिर्फ खरे उतरेंगे रेणु। तीसरी कसम जहां तक रेणु के कथा पात्रों की बात है वह किसी एक दृष्टि के हिमायती नहीं बन पाए हैं, कहीं भी। क्योंकि गाँव में एक दृष्टि का ठहराव कहीं मिलता भी नहीं। यही कारण है कि, सभी माननीय व्यवस्थाओं या जटिलताओं को किसी एक पत्र में तलाश पाना कठिन प्रक्रिया तो है ही मानवीय, अमनोवैज्ञानिक भी है। रेणु के गाँव के पात्र किसी नजरिया से समाज में जीने के अभ्यस्त नहीं है और नहीं भी किसी खास किस्म के जीवन मूल्यों में आपात मस्तक स्नेह रहने के लायक है। तीसरी कसम में हीरामन और हीराबाई के अंतर संबंधों में परंपरागत मिठास की जगह पर प्रेम के सात्विक किंतु गहरे भावबोध की मिसाल कहानी है। कहानी को नए जीवन सत्यों के द्वार तक पहुंचा देती है। "हीरामन का जी जुड़ गया। हीराबाई ने अपने हाथ से उनका पत्तल बिछा दिया। पानी छींट दिया। जुड़ा निकाल दिया। इस! धन्न! धन्न है। हीरामन ने देखा भगवती मैया भोग लगा रही है। लाल होठों पर गोरस का परस ...पहाड़ी तोते को दूध भात खाते देखा है।" लाल पान की बेगम रेणु के गाँव में लोगों की चाहत के कहीं परिदृश्य नजर आते हैं। जिसमें से एक है उसकी शहरी कल्पना। शहर में बढ़ती वैज्ञानिक रंगत से वे अप्रभावित नहीं है। देहाती होने से बचाने की भरसक कोशिश रेणु की बनी रहती है। अपने मानसिक दबाव को जब वे पात्रों में अवतरित करने लगते हैं तब उनके पात्र किसी आकांक्षाओं से लग जाते हैं। लाल पान की बेगम कहानी में रेणु की वार्तालाप शैली अतिरिक्त अभिव्यंजना का आधार बन गई है। यह अतिरिक्त अभिव्यंजना है। पात्र के माध्यम से गाँव के वातावरण का चित्रण। वातावरण के बीच पात्र चित्रण की पुरानी परंपरा को त्यागकर पात्र के बीच वातावरण की कल्पना की सार्थक

Scanned with ACE Scanner

अभिव्यक्ति की बहल नेये कथादर्शन का बीजारोपण करती है। रेणु की यह अनूठी पहचान अन्यत्र दुर्लभ है। ऐसा अनेक स्थलों पर पात्रों में समाज के संबंधों में कसे पात्रों के बाहर निकालने की छटपटाहट और बेचैनी दृष्टिगोचर होती है। वातावरण उनकी असहज आकांक्षा के बीच दब जाती है। लाल पान की बेगम इसका स्वस्थ प्रमाण है। "अच्छा अब एक बैसकोप का गीत गा तो चंपिया! डरती है काहे? का है जहां भूल जाओगी, बगल में तो मास्टरनी बैठी ही है।" पंचलाइट गाँव के विकास पर व्यंग्य करती कहानी पंचलाइट आधुनिक भारत की वैज्ञानिक प्रगति का उपहास करती है। उपेक्षित गाँव में पंचलाइट या गैस बत्ती का होना शहर में बिजली से कम सुकून देने वाला नहीं है। इस कहानी में गोधन के सामाजिक बहिष्कार को जितने सहज और स्वस्थ तरीके से बाहर कर दिया जाता है, उसी से गाँव में पंचलाइट के महत्व को समझा जा सकता है। बहिष्कृत गोधन पर आरोप था कि, वह सिनेमा के गीत गा-गा कर मुनरी को आकृष्ट करता है और उस पर डोरे डालता है। जिसकी शिकायत मुंनरी की माँ ने की और पंचों ने उसका हुक्का पानी बंद कर दिया। अपराध गंभीर था इसलिए हुक्का पानी खुलना मुश्किल था। परंतु पंच लाइट जलाने की कला गोदन के पास थी और पंचलाइट ना जलाना सारे गाँव की इज्जत जाने जैसा था। इसलिए वह गोधन को बुलाया गया उसने पंच लाइट जलाकर गाँव की इज्जत बचा ली। फलतः उसका हुक्का पानी फिर खुल गया सरदार ने गोदन को बहुत प्यार से पास बुला कर कहा "तुमने जाति की इज्जत रखी है, तुम्हारा साथ खून माफ। खूब गाव सलीमा का गाना।"शहर की बिजली बत्ती को गाँव का व्यक्ति मुहावरे का रूप किस तरह दे देता है इसका प्रमाण है जंगी के पत्तों का व्यंग जब वह कहती है। चल दिदिया चल! इस मोहल्ले में लाल पान की बेगम बस्ती है। नहीं जानती दोपहर दिन और रात बिजली की बत्ती चक्कर जलती है भक भक बिजली बत्ती की बात सुनकर ना जाने क्यों सभी खिलखिला कर हंस पड़ी फुआ की टूटी हुई दंत पत्तियों के बीच से एक मीठी गाली निकली शैतान की नानी।! रेणु जी गाँव के वातावरण को जीवंत बनाने के लिए किसी साधक की तरह गाँव की गालियों तक का इस्तेमाल करने में नहीं हिचकिचाते। बात बात में उनके पात्र अपने मन मुताबिक बतियाते हैं और गरियाते हैं, किंतु उसमें उनका प्रेम दुलार सब कुछ एक साथ टपक पड़ता है। जीभ के झाल को गले में उतारकर बिरजू की माँ ने अपनी बेटी चंपिया को आवाज दी- "अरी चंपिया-या-या, आज लौटे तो तेरी मुंही मरोड़कर चूल्हे में झोंकती हूँ। दिन ब दिन हूँ दिन दिन बेचौन होती जा हैं।

गाँव में तो अब टेंडर बैसकोप का गीत गाने वाली पतुरिया-पतेहू सब आने लगी है। कहीं बैठे के 'कहीं बाजे मुरलिया' सीख रही होगी। ह-र-जा-ई-ई। अरी चंपिया-या-या।" तीर्थोदक रेणु जी अपनी कहानियों में छोटी-छोटी बातों को जिस हिफाजत और करीने से सजा देते हैं उस तरह कोई भी साहित्यकार सजाने में महारत हासिल नहीं कर पाया, अभी तक। तीर्थोदक कहानी में घर के रहन-सहन, जीवन दर्शन, सामाजिक दृष्टिकोण आदि समस्त उपक्रमों को सधी हुई भाषा शैली में चित्रित कर डालने की कला सिर्फ रेनू जी की अपनी कला कही जा सकती है। लल्लू की माँ को बोध बाबू जब समझाते हैं कि, 'पूरक बच्चन काटे जो नारी' तब लल्लू की माँ जो जवाब देती है, उसमें संपूर्ण पुरुष समाज के प्रति ललकार छिपी किंतु इसके बावजूद पति के प्रति सम्मान पर प्रश्न चिह्न नहीं लगने दिया है। घर और समाज के मर्यादा पालन की यह अनूठी कला भी सिर्फ रेणु की नारियों के पास मिलेगी। रखिए अपना पुरुख बचना। खूब सुन चुकी हूँ पूरुख बच्चन। चालीस साल से और किसका बच्चन सुन रही हूँ? कभी बात से बेबात या चाल से कुचाल नहीं चली। तिस पर रोज तीन कोड़ी गालियां सास, ससुर और इनकी। ठेस चरित्र को आधार बनाकर समाज में व्यक्ति के संबंधों को विश्लेषण करने की मनोवैज्ञानिक कोशिश हुई इस कहानी में सिरचन चटोर है, मुंहजोर है और किसी की न सहने वाला एक ऐसा कुशल कारीगर है। जिसके गुण उसके सिर पर चढ़कर बोलते हैं। इसलिए किसी को बता नहीं पर हृदय से वह विपन्न नहीं है। मानू के लिए शितलपाटी बनाते बनाते जब वह चाची के डांटने पर हनहनाते अंगन के बाहर निकल गया तो मानू आनमानी हो गयी। सिरचन को मानोगे मानु के अनमनेपन का अंदाजा हो गया था। इसलिए मानू विदा काल में गाड़ी को छूटते चिक, आसनी और शीतलपाटी भेंट करने पहुंच जाता है। गाँव में छोटे बड़े का सम्मान संबंध कितना गहरा होता है इसका प्रमाण है रेणु जी की ठेस कहानी। सारांश अंततः यह कहना गलत नहीं होगा कि, रेणु साहित्य गाँव की तमाम विसंगतियों की विश्लेषित संस्लेषित करने में सफल है। गाँव और शहर के जुड़ते ताल्लुकातों को गति, स्वरूप और दिशा देने में भीं वे सफल रहे हैं द्र प्रसाद पांडे जैसे प्रगतिशील आलोचक उपन्यास मैला आँचल में आंचलिक तत्व मिलते हैं। इस तरह की समीक्षा के जन्मदाता के योगदान को प्रदान करने की पहल का एक अंग होती है। सवाल यह नहीं है कि छायावाद, प्रगतिवाद या आंचलिक जैसे विशेषण के रूपों के साथ कब और क्यों जुड़ जाते हैं। या कब और किन रचना रुपों को देखकर किसी रचना शैली को प्रदान कर

Scanned with ACE Scanner

दिया जाता है। सवाल है कि, इस तरह के विशेषण किसी खास समय पर ही क्यों जोड़ दिए जाते हैं। इससे पहले या बाद में नहीं। जाहिर है किसी मौलिक चिंतन के धनी रचनाकार के साहित्य में ही खूबी है, जिनके कारण वह किसी विशेषण का हकदार होता है। और रचना की पहचान रेखांकित करने में सक्षम दिखाई देती है। तभी कोई विशेषण संपूर्ण विधा या चेतना का परिचय हो पाता है। अन्य तत्वों को ढूंढ ढूंढ कर अपनी रचना में समाविष्ट करके चलता है। उनके आधार पर ही उसकी रचना की जाती है, जो निश्चित ही किसी दूसरे में नहीं मिलती है। रेणु के साहित्यिक तत्व की कसौटी पर यशपाल या प्रेमचंद खरे नहीं उतरते हैं, नागार्जुन या भैरव प्रसाद गुप्त भी खरे नहीं उतरते, सिर्फ खरे उतरेंगे रेणु।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हरीकृष्ण कौल, फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियां: शिल्प और सार्थकता
2. डॉ. प्रिया ए., फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियों में गाँव के चित्र
3. फणीश्वर नाथ रेणु, तीसरी कसम (कहानी संग्रह)
4. फणीश्वर नाथ रेणु, मैला आँचल (उपन्यास)

Scanned with ACE Scanner